IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में चित्रित नारी विमर्श

श्री. नीलेश वसंतराव जाधव
अनुसंधाता, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
niljadhav9182@gmail.com

शोध सारांश : *समाजिक परिवर्तन का सजीव और प्रामाणिक दस्तावेज साहित्य माना जाता है, क्योंकि यह समय-समय पर समाज, परिवार और व्यक्ति के बदलते स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। इक्कीसवीं सदी में सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों और व्यक्तिगत जीवन में तीव्र परिवर्तन देखने को मिले हैं, जिनका प्रभाव साहित्य पर भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में नारी-विमर्श इसी परिवर्तनशील परिप्रेक्ष्य का एक महत्वपूर्ण आयाम है। नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में नारी जीवन की विविध समस्याओं और जटिलताओं का यथार्थपरक चित्रण मिलता है। उनकी कहानियाँ नारी के पारिवारिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संघर्षों को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। सुखी दांपत्य जीवन के साथ-साथ दिव्यांग संतान के कारण उत्पन्न तनाव, तलाकशुदा या विभक्त नारी का संघर्षपूर्ण जीवन, संयुक्त परिवार में उत्पन्न द्वंद्व, तथा पति के बाहरी संबंधों से उत्पन्न वैवाहिक टकराव जैसी स्थितियाँ उनकी रचनाओं में प्रभावी रूप से उभरती हैं।*

इसके अतिरिक्त, नागदेव ने आधुनिक जीवन के खोखलेपन और नारी के प्रतिशोधात्मक व्यवहार को भी चित्रित किया है, जहाँ दांपत्य संबंधों में विश्वास का संकट स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि नारी की समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का परिणाम हैं। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं विविध आयामों के माध्यम से नागदेव के कथा-साहित्य में नारी-विमर्श को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द – नारी, समाज, जीवन....आदि ।

1. प्रस्तावना

नागदेव जी ने अपने साहित्य में समाज के सभी रंग-रूपों में व्याप्त नारी के रूप को अपनी पैनी नजर एवं तूलिका रूपी लेखनी से बड़ी भावत्मकता और कलात्मता से उकेर ने का प्रयास किया है। नरेंद्र नागदेव के साहित्य में चित्रित नारी लेखन उच्च कोटी का एवं वैविध्यपूर्ण भी है। राजी सेठ नामक आलोचक नरेंद्र नागदेव के बारे में लिखती है कि, "इस प्रकार की संरचना अब तक के विवरणात्मक घटना-प्रधान कथारूप से भिन्न होने के कारण एक अलग प्रकार के रसास्वादन की सृष्टि करती है।" 1 और उनके चित्रकार और वास्तुशिल्पी होने के बारे में कहां है कि "घटनाओं के जमघट में कथा के लिए सही और उपयोगी प्रतीकों के ढूँढ लाना खासे कल्पनाशील ढंग से हुआ है। उसे रचना-विन्यास में एक धीमा विश्रांतभाव भी दिखाई देता है जो वास्तुकार का गुण और चित्रकार का धीरज भी माना जा सकता है।" 2 नागदेव के उपर्यक्त दोनों रूप कहीं-न-कहीं उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। एक चित्रकार एव वास्तुशिल्पी की कल्पना को जानने के लिए कला का उपासक तथा एक सतर्क पाठक होना आवश्यक है। नरेंद्र नागदेव के कहानी के भाषा शिल्प के बारे में सूर्यबाला कहती हैं, "मानव प्रकृति और अंतरमन के बदलते रंगों, विडम्बनाओं और उतरती केंचूलों को बडी परख, सूक्ष्मता और यत्नपूर्वक दर्शाया हैं; कथाकार ने। अच्छि बात यह कि सुरुचि, प्रतिभा और यत्न है लेकिन मशक्कत या जबरदस्ती ठूँसने की उठा-पटक नहीं। शिल्प की रोचक भंगिमा का उपयोग पाठक के मन को छूनेमें सहाय्यक है।" 3 सहीं मायने में नागदेव कहीं भी पात्र के उपर हावी होकर जबरदस्ती अपने मनोभावों को उद्घाटित करे नजर नहीं आते है बल्कि अपने कहानी संसार के वातावरण में समस्त रूप में नारी नदी पात्र में बहते पानी के बहाव के जैसे बहती नजर आती है। वैसे नागदेव के कहानी के सभी नारी पात्र वातावरण एवं परिस्थिति के अनुरूप प्रवाहमान दिखाई देते है। कहीं भी लेखक पत्रों पर हावी या अपनी बात जबरदस्ती मानवता या लादता नजर नहीं आता है। नारी किन-किन समस्याओं से घीरी है इसका मूर्तिमंत उदाहरण नागदेव का कहानी में देखा और समझा जा सकता है।

DOI: 10.48175/IJARSCT-37511

IJARSCT
ISSN: 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

- **नारी-विषयक समस्या** :

नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में नारी विषयक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती है उनका विवेचन निम्न मद्दों के आधार पर स्पष्ट किया है। नरेंद्र नागदेव की कहानी लेखन के संदर्भ में उदय प्रकाश लिखते है कि, "नागदेव की कहानियाँ चालू ढर्रे की यथार्थमूलक कहानियों की दहिद्रता और सपाटता से अलग हमें एक ऐसी दुनिया की ओर ले जाते है, जो अधिक आत्मीय, संवेदनशील, अन्तरंग और स्मृति संपन्न है। इनकी कहानियाँ कल्पना और यथार्थ की विपन्नता की नहीं, दोनों की अपेक्षाकृत संपन्नता की कहानिया है।" 4 उदय प्रकाश जी की बात से बिलकुल सहमत हूँ कि नागदेव जी के पात्र अपने वर्तमान में जीते-जीते, आपने स्मृतियों में खोते एवं दोनों धरातल पर सामान रूप से प्रवाहमान होते दिखाई देतें हैं ऐसा मुझे लगता है।

1. कामकाजी नारी की समस्या :

नरेंद्र नागदेव जीने अपने साहित्य में कामकाजी नारी की समस्या को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। 'समर्पण' की कहानी की अपर्णा नायक से प्रेम करती है उससे समाने विवाह का प्रस्ताव रखती है। लेकिन शादी नये जीवन की शुरुवात करने की बजाए बाजरवादी व्यवस्था में अपने-आप को उलझा लेती है और अपने प्यार को दाव पर लगाकर कारोबारी दाव-पेंचों में नायक को फसाकर सिर्फ पार्टनर बनाना के कामना करती है। उसके लिए वह अपने एकाउण्टेंट मित्र सक्सेना जी से एग्रीमेंट करवा लाती है। प्यार में लोग अपना सब कुछ अपने प्रेमी पर न्योछावर कर देते है पर यहाँ अपर्णा अपने प्रेम को कितनी सारी शर्तों में ही बांधती नजर आती है। ये आजके आधुनिक नारी पात्र का प्रतिनिधित्व करता पात्र हैं। समर्पण पूरी तरह तभी संभव होता है जब आपको विश्वास हो की वह भी आपके प्रति उतना ही समर्पित भावना रखती हो। वह आधुनिक युग की पढ़ी - लिखी नारी है और समाज के सभी बंधनों से परे और वह अपना अग्रीमेंट एक बार में शराब को पीते हुए होनेवाले पति को समझा रही है। यह गुण पाश्चात्य संस्कृति से आएं है। अपर्णा जुनेजा जैसे भ्रष्ट, धूर्त और धोकाधड़ी में माहिर व्यक्ति को अपने कंपनी का एकाउण्टेंट बनाना चाहती थी। जिसका परिणाम साफ था। अखीर में वह कहता है कि, "तुम अब अकेली चली जाना। मुझे अलग जाना है।" 5 नायक भारतीय पुरुष है, जो एक सुसंकृत नारी को पत्नी के रूप में पाना चाहता है लेकिन वह संभव नहीं हो सका। वह एक पक्की कामकाजी नारी है जो पुराने जमाने की नारियों से अलग है। अपने दांपत्य जीवन से ज्यादा अपना बाजरवादी नीति को महत्त्व देती दिखती है। जिसके परिणाम स्वरूप वह अपना प्रेमी खो बैठती है और किसी कंपनी के घोटाले में पकड़ी जाती है; जैसे नायक यह पहले से जानता था कि एक दिन यह होकर ही रहेगा। 'कठघरा' कहानी की गिरिशबाबू की पत्नी तृप्ता एम्पोरियम में नौकरी लगाने के लिए शिफारिश करने वाले भसीन की ओर आकर्षित हो जाती है। तृप्ता देर रात तक उसी की गाड़ी में घूमती रहती है और अपने द्वारा किए कृत्य के लिए अफसोस या माफी नहीं मांगती है। तृप्ता को अपने पति का साथ देना चाहिए था लेकिन बाहरी चकचोंध भरी दुनिया की कौंध ने उसकी आँखों पर पट्टी बंधी थी। अपना पत्नी धर्म वह भूल गयी थी। जिसके चलते गिरिशबाबू का और तृप्ता के संबंध टूट जाते है। शहरी जीवन में आब यह चित्र अब आम सा बन सा गया है।

2. नारी के अकेलेपन की समस्या :

'पीला पड़ता संगमरमर' की मैडम मारबल अपने कारखाने में ऐसे लोगों को नौकरी देती थी जो निरीह और दयनीय लगते हो और उनपर तरस खाकर इंक्रीमेंट, ग्रेचुटी देती थी। इतने कारखाने, पैसे होते हुए भी वह बीमारी से अगर वह मर गई तो बिलकुल तहेदिल से दु:खी हो जाए और बचने के बाद खुश होने के लिए किराये पर लोग लाने की बात करती चित्रित की है, अपने जीवन में तमाम शानोंशौकत होते हुए भी उनके आखरी समय में उनके जाने के बाद दु:खी होकर रोनेवाला भी कोई नहीं है, वह अकेलेपन से के मानसिक रोग ग्रस्त है। अपनी की बात को प्रमाण मान लेने वाली कही मारबल मैडम आज शहरी समाज देखने को मिलती हैं। 'प्रतिशोध' कहानी में अनूप की शादी सावली लडकी से हो जाती है और उसे लागने लगता है की कोई अनचाही चीज उसके घर में आ गयी हो। कहीं दिनों बाद वह अपने कारखाने में बने ब्रश को बेचने दूसरे शहर जाना शुरू करता है। शादीशुदा होते हुए भी वह दांपत्य जीवन में अकेलापन महसूस करने लगी थी। शादी दो दिलों को एक बंधन में बांध देती है। लेकिन अनूप का अपनी पत्नी से दुर्व्यवहार करता चित्रित किया है। हर पत्नी की तरह वह भी उन सारे सुखों को पाने की हकदार है। लेकिन वह शादीशुदा होकर भी अकेली थी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

3. कुलच्छिनी एवं कलंकिता नारी की समस्या:

'गिद्ध' कहानी की बावरे की माँ को गाँव का मुखिया और पांडुरंग घोरपड़े कुलच्छिनी एवं कलंकिता कहते थे और कहतेऔर बोलते कि, "गाँव की इज्जतदार बहू-बेटियों पर कितना खराब असर पड़ेगा इन लोगों का गाँव में आने से।" 6 अपने आप को कुशल कूटनीतिज्ञ कहते थे। उन्हें जब चाहे तब गाँव से निकाल फेंकने की बात करते तथा उससे कोई लाभ उठाया जा सके तो भी क्या हर्ज है? ऐसी सोंच रखने वाले निकम्मे दोगले इंसान थे ये। बावरे की माँ खोजकर एक घड़ा पानी लाकर गाँव के बाहर उसने एक चबूतरा एवं चपरी डाल दी थी। दिन भर धूप और लू के थपेड़ों के बीच वह उस पर बैठकर राहगीरों को जल पिलाती थी। उसकी माँ को लाभदायक थी तब तक झेल लिया इन्होंने। क्या बावरे की माँ का पुण्य भरा काम ही इतने सालों तक इसे इस गाँव में टीके रहने दिया था यह भी सोचने की बात है। नरेंद्र नागदेव जीने इस जल कुंभ की तुलना समुद्र मंथन से निकले अमृत-कलश से की है। हम अपने बड़े-बुजुरुगोंसे सुनते आए है कि प्यासे की प्यास बुझाना बड़ा पुण्य का काम होता है और यह सही भी है ऐसा मुझे लगता है।
'रिश्ते' कहानी में अतुल के पिता ने अतुल की शादी करवाने के समय बुढ़ापे में अपने से बीस साल छोटी लड़की से शादी की थी। अतुल अपने से पाँच साल बड़ी इस लड्की से साथ कौनसा रिश्ता जोड़े समझ नहीं रहा था। अतुल घर छोड़ कर चला जाता है। कुछ समय बाद उसके मरने का टेलीग्राम आता है और जब उसका शव लाया जाता है तो वह घर से बाहर आकर अपनी चूड़ियाँ फोड़ती है, अपनी माँग पोछती है, अपना सिंदूर मिटाती है। तो मोहल्ले में अनाप-शनाप बाते होने शुरू हो जाते है। नरेंद्र नागदेव जीने यहाँ अपनी नैतिकता और अपनी उत्तरदायित्व निभाने की बात यांद दिलाना चाही है।

4. निसंतान नारी की समस्या:

'उतार' कहानी में नायक के चाचा जो बंबई में रहते थे। उन्हें कोई संतान न होने के कारण नायक की दीदी को बंबई ले गए थे। दीदी की शादी होने के बाद भी कई सालों तक संतान नहीं थी उसने बड़े भैया के छोटे लड़के को अपने साथबंबई ले जाने की बात कहते वक्त बोली थी कि, "जैसे चाचाजी ने मुझे रख लिया था। कोई बच्चा नहीं से घर सचमुच बड़ा सूना लगता है।" 7 पुत्र प्राप्ति न होना इसमें कोई नारी का दोष नहीं होता है।
'दूसरी दुनिया में' कहनी की जेसिंथा को कोई औलाद नहीं थी लेकिन बच्चे नहीं है इसका मातम न मनाते हुए वह अपने सेठ के बच्चों को ही अपने बच्चे समझकरबड़े दुलार से उनका लालन पालन करती है। उन्हें अपना ही समझती है। उनके सुख के लिए वह अपने पति तक को मार डालती है, क्योंकि माइकल सेठ के बच्चे को नशे का आदी बना रहा था इस लिए।

5. दिव्यांग बच्चे की समस्या :

नरेंद्र नागदेव जीजी ने अपनी कहानियों में 'समापन' का बबलू हो या 'वहीं रूक जाते' का चिंटू इन दिव्यांग पात्रों के द्वारा परिवार की नारी कैसे इन्हीं बच्चों के ईद-गिर्द उसकी दुनिया घूमती रहती है। नारी के जीवन में उसके बच्चे की अहमियत बहुत बड़ी होती है, बच्चा कैसा भी हो वह उसके आँख का तारा होता है जैसे 'समापन' सुजाता हो या 'वहीं रूक जाते' की सुलेखा हो अपने बच्चों में सुधार होगा वह भी आम बच्चों की तरह जीवन बिताएँगे ये आस छोडने के लिए कतई तैयार नहीं होती हैं। पति से ज्यादा ध्यान उनका इन बच्चों में अटका होता है। जिसके चलते पारिवारिक वातावरण थोड़ा तंग बन जाता है। उसे अगर बच्चा ना हुआ तो पूरा समाज बाँझ नारी के रूप में देखना शुरू कर देता है और अगर बच्चा दिव्यांग जन्मा हो तो भी घरवालों के तानों को सुनना पड़ता है। दोनों हालातों में नारी को ही झेलना पड़ता है।

6. बेमेल विवाह की समस्या:

नारी के जीवन में विवाह बहुत बदलाव लाता है। नरेंद्र नागदेव जीकी 'प्रतिशोध' कहानी में अनुप और उसकी पत्नी की शादी के बाद अनुप को उसकी पत्नी जैसे कोई अनचाही चिंज उसके घर में आ गयी है कि भावना निर्माण होने लगती है। अनुप दिखने में सुंदर था और उसकी पत्नी सावली थी। वह उसे पत्नी का दर्जा नहीं देता है और उसकी कमी पूरी करने के लिए शहर जाया करता है। जिसके चलते उसकी पत्नी पति का प्रेम पाने के लिए तड़पती रहती है। वहीं 'आक्रामक' कहानी में पूनम की शादी पैसेवाले पचांस साल के बुढे के साथ करवा दी जाती है जिसकी वह तीसरी शादी थी। पूनम की शादी तो हो जाती है मगर उसे उस गहर में पत्नी के अधिकार तक नहीं मिल पाते हैं। तो 'रिश्ते' कहानी में अतुल के पिता अतुल की शादी करवाने के बदले अपनी ही शादी

करवा लेते है और अपने से बीस साल छोटी लड़की को पत्नी बना के घर लाते है। अतुल इसका खुला विरोध करता दर्शाया है। अपने पिता की नई ब्याही पत्नी जो उससे पाँच साल बड़ी थी उससे कौनसा रिश्ता जोड़े इसके बारे में चिंतित दिखता है। उससे नाजायज संबंध बन जाते है और अतुल घर छोडकर निकाल जाता है। बेमेल विवाह से नारी का जीवन ही उजड़ जाता है। यह नागदेव जीने अपने साहित्य में चित्रित किया है। विवाह शब्द के बारे में रोहणी अग्रवाल लिखती है कि, "विवाह का लक्ष्य वैयक्तिक संतुष्टि, वैयक्तिक हितों और आकांक्षाओं की पूर्ति न होकर परिवार और समाज के प्रति एक सामाजिक कर्तव्य था।" 8 विवाह के इस उद्देश्य से सामाजिक दायित्व निभाने का कार्य होता है। लेकिन आज के दौर में विवाह पद्धति में कई बाधाएँ आ रही है। जिनके चलते बेमेल विवाह असफल प्रेम, झगड़े आदि के कारण परिवार बिखर रहें है। जिनका चित्रण नरेंद्र नागदेव जीके कहानी साहित्य मेंड दृष्टिगोचर होता है।

7. अकर्मण्य पति से उत्पन्न नारी की समस्या :

नरेंद्र नागदेव ने अकर्मण्य पति के कारण पत्नी पृप्ता उसके साथ कैसा व्यवहार करती है इसका चित्रण प्रस्तुत 'कठघरा' कहानी में किया है। गिरिश बाबू अपनी एक नौकरी ठीक से संभाल नहीं पाते है। अपने इर्द-गिर्द एक मायावी दुनिया बनाकर बैठे होते है। अपनी माँ को अपने जीवन की कड़वी सच्चाई का पता नहीं चले इसका हर संभव प्रयास करते है। परिणाम स्वरूप उसकी पत्नी तृप्ता भी उसे छोड़ उसके दोस्त भसीन से प्रेम करने लगती है। जिसके सिफ़ारिश से उसको एम्पोरियम में नौकरी लगी थी।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि नरेंद्र नागदेव के कहानी साहित्य में नारी जीवन का चित्रण अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और यथार्थपरक रूप में सामने आता है। उनकी कहानियाँ नारी को केवल सहानुभूति की पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक इकाई के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो बदलते समय, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच निरंतर संघर्षरत है। आधुनिक युग में नारी की स्थिति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उसे केवल व्यक्तिगत स्तर पर न देखकर व्यापक सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में देखा जाए। नागदेव के कथा-साहित्य में यह दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आज की कामकाजी नारी आर्थिक रूप से सशक्त होने के बावजूद एक गहरे मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व से गुजर रही है। आधुनिकता, बाजारवाद और भूमंडलीकरण की प्रक्रियाओं ने जहाँ उसे स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय की शक्ति प्रदान की है, वहीं इन शक्तियों ने पारंपरिक संबंधों की संरचना को भी कमजोर किया है। परिणामस्वरूप, नारी के जीवन में एक प्रकार का मूल्य-संकट उत्पन्न हुआ है, जिसमें वह भौतिक सफलता और भावनात्मक संतुलन के बीच संतुलन स्थापित करने में कठिनाई अनुभव करती है।

इस स्थिति का विश्लेषण नारी-विमर्श के विभिन्न प्रतिमानों के अंतर्गत किया जा सकता है। उदारवादी नारीवाद नारी की स्वतंत्रता और समान अधिकारों की वकालत करता है, किंतु नागदेव के साहित्य में यह स्पष्ट होता है कि केवल आर्थिक स्वतंत्रता नारी की समस्याओं का समाधान नहीं है। वहीं समाजवादी और मार्क्सवादी नारीवाद के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था नारी को श्रम और उपभोग की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करती है। नागदेव की कहानियाँ इस दृष्टिकोण की पुष्टि करती हैं, जहाँ नारी का श्रम और उसकी भावनात्मक संवेदनाएँ बाजारवादी मूल्यों के सामने गौण हो जाती हैं।

इसके अतिरिक्त, पितृसत्तात्मक समाज की संरचना भी नारी की समस्याओं का एक प्रमुख कारण है। नागदेव के कथा-संसार में यह तथ्य बार-बार उभरकर सामने आता है कि नारी जन्म से न तो 'कुलच्छिनी' होती है और न ही 'कलंकित' , बल्कि सामाजिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक दबाव और सांस्कृतिक मानदंड उसे ऐसे व्यवहार की ओर धकेलते हैं, जिन्हें समाज बाद में उसी के विरुद्ध आरोपित करता है। इस प्रकार, नारी के चरित्र का निर्माण सामाजिक संरचना द्वारा किया जाता है, न कि उसके स्वभाव द्वारा। आधुनिक दांपत्य जीवन में भी अनेक प्रकार की विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं, जिनका प्रभाव नारी के जीवन पर विशेष रूप से पड़ता है। संतानहीनता, दिव्यांग संतान की जिम्मेदारी, पति के बाहरी संबंध, बेमेल विवाह और अकर्मण्य पति जैसी स्थितियाँ नारी के मानसिक संतुलन को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से कॉरपोरेट संस्कृति में कार्यरत दंपतियों के बीच भावनात्मक दूरी और संबंधों का औपचारिक हो जाना एक गंभीर समस्या के रूप में उभरता है। इसके परिणामस्वरूप परिवारों में तनाव, अशांति और असंतोष की स्थिति उत्पन्न होती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

नागदेव के साहित्य की विशेषता यह है कि वे नारी को केवल पीड़ित रूप में नहीं, बल्कि एक सक्रिय और प्रतिक्रिया करने वाली सत्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कई स्थानों पर नारी अपने ऊपर हुए अन्याय के प्रति प्रतिरोध भी करती है, जो उसके आत्मबोध और स्वायत्तता का संकेत है। यह दृष्टिकोण समकालीन नारी-विमर्श के उस पक्ष को मजबूत करता है, जो नारी को एक सशक्त और निर्णयक्षम इकाई के रूप में स्वीकार करता है। अंततः कहा जा सकता है कि नरेंद्र नागदेव ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से समकालीन समाज में जी रही नारी के जीवन का सजीव और प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य नारी-विमर्श को न केवल गहराई प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक यथार्थ की नई परतों को भी उद्घाटित करता है। इस प्रकार, नागदेव का कथा-साहित्य नारी-अस्मिता, सामाजिक संरचना और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है।

संदर्भ

1. सेठ राजी, अंतक:रण के दाह की कहानियाँ, हंस पत्रिका, फरवरी, 2004 पृष्ठ क्र. 81
2. वहीं – पृष्ठ सं.- 82
3. सूर्यबाला, दै. समाचार अक्षर विश्व, उज्जैन, 1987 पृ. सं., 04
4. उदय प्रकाश, 'उसी नाव में' , सचिन प्रकाशन, नयी दिल्ली,1988 - किताब की भूमिका में लिखा है।
5. नरेंद्र नागदेव, वापसी के नाखून, (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003) पृ. सं. – 63
6. नरेंद्र नागदेव, पेड़ खाली नहीं है (किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017) पृ.सं.-42
7. नरेंद्र नागदेव, तमाशबीन, (नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, 1987) पृ. सं. – 99
8. रोहणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन दिल्ली, प्र.सं.1992, पृ.सं. 130

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37511